परिचय – भंजनगर गाँव से बाघ का यह विशाल मुखौटा धार्मिक विचार का प्रतीक होने के साथ साथ ओडिशा के गंजाम जिले की **ब्याघ्र देवी** (वन दुर्गा) की उपासना से भी संबंधित है। 17 वीं सदी में कवि सम्राट उपेन्द्र भंज के आश्रय में माँ **ब्याघ्र देवी** के वार्षिक जुलूस के अंतर्गत बाघ **मुखौटा नृत्य ब्याघ्र देवी** को प्रसन्न करने का एक माध्यम था। यह पशु मुखौटा नृत्य का अंग होने के कारण बाघ सहित अन्य जीव जंतु जैसे सिंह, मृग, बैल, घोडा, मयूर एवं हंस का भव्य नाटकीय प्रदर्शन, देवी के स्वागत एवं प्रसन्न कर वनों एवं स्थानीय समुदायों के लिए आनंदपूर्ण व समृद्ध जीवन प्राप्त करने हेतु किया जाता है। स्थानीय समुदायों की मान्यतानुसार यही जीव जंतु **देवी ब्याघ्र** की शूरता को बढ़ावा देने हेतु प्रचार करने के साथ-साथ वनों की रक्षा भी करते हैं। **ब्याघ्र देवी** के **वाहक** स्वरूप नृत्य व जुलूस के दौरान वन्य जीव जंतुओं के मध्य बाघ की एक अहम् भूमिका रहती है।

National Forest Week
07th July, 2016

International TIGER DAY
29th July, 2016

बाघ
Baagh

मनुष्य एवं पशु का अनोखा संबंध
A unique bond between man and animal

आरोहण क्रमांक/Accession No.:
2014.338

समुदाय / Community:
चित्रकार / Chitrakar

संकलन स्थान/ Place of collection :
भंजनगर गाँव,
गंजाम जिले, ओडिशा
Bhanjanagar village,
Ganjam district, Odisha

लम्बाई – 84 से. मी., ऊँचाई – 72 से. मी.
व चौड़ाई – 36 से. मी.
Length - 84 c.m., Height - 72 c.m &
Breadth - 36 c.m.

INTRODUCTION - Baagh, the life size Tiger mask from Bhanjanagar village is an expressive symbol of the religious ethos deeply associated with the worship of Goddess **Byaghra Devi** (Van Durga) of Ganjam district, Odisha. Since 17th century, under the patronage of the poet-king **Kabi Samrat Upendra Bhanja** this ancient Tiger mask dance was an invocation rite to appease the Tiger Goddess **Byaghrya Devi** during annual ritual procession of Devi Maa, called **Byaghra Devi Yatra**. Being a part of this animal mask dance the other animals and birds such as lion, Deer, Bull, Horse, Peacock and Swan along with the tiger are represented with grand and dramatized expression to appease and welcome the arrival of the Goddess for attaining blissful and prosperous life of the forest and the local communities. It is a belief of the local people that these animals were the beings who guard and proclaim to promote the powers of the Goddess **Byaghra** and forest. **Bagha**, being a **vahana** (vehicle) of Goddess Byaghra among the other animal plays a vital role during the dance and procession.

नृत्य एवं शैली/ The dance and it's operation

स्थानीय तौर पर पशु मुखा नृत्य से जाना जाने वाला यह मुखौटा नृत्य ओडिशा के गंजाम जिले खासतौर पर भंजनगर उपखंड में प्रचलित प्राचीन नृत्य में से एक है। गंजाम जिले का उत्तरी भाग घने वनों से घिरा है जहाँ के स्थानीय समुदायों द्वारा वन दुर्गा को विभिन्न नामो से पूजा जाता है जैसे – ब्याघ्र देवी, बाक देवी तथा ठकुरानी देवी। इन देविओं के सम्मान में एवं आस्था स्वरूप दर्शाने हेतु कलाकार इन विशाल मुखौटों को धारण कर पारंपरिक वादकों द्वारा बजाए जाने वाले चांगु (वृत्ताकार वाद्य) एवं कहली (सुषिर वाद्य) की धुन पर नृत्य करते हैं। मुखौटे को इस तरह परिकल्पित किया जाता है जिससे कि दो नर्तकों के केवल पैर ही दिखते हैं जो की दर्शकों को चौपाया पशु का आभास कराता है। प्रथम नर्तक मुखौटे के शीर्ष को आवश्यकतानुसार एक छड़ी के माध्यम से उठा कर रखता है जहाँ से वह शीर्ष के खुले मुंह से बाहर देख सके। पिछला नर्तक केवल प्रथम नर्तक व गुरू के निर्देश तथा इशारे का पालन करता है।

The animal Mask Dance locally known as Pasu Mukha Nrutya is one of the ancient dance forms prevailing in the district of Ganjam, Odisha, especially in Bhanjanagar sub-division. The Northern part of Ganjam is largely populated with dense forest area where the Van Durga is worshiped by local communities by different names like Goddess Byaghra Devi, Bak-Devi, and Thakurani Devi. In the honor of these deities and to show their divinity aspect , the artists wear these life-size tiger mask and performs with the rhythmic sounds of 'Changu'(single membrane drum) and Kahali(trumpet) played by traditional musicians. The body of the mask designed in such a way that the two dancers conceal them selves only with their leg visible to provide impression on the spectator of a quadruped animal. The front dancer holds the head of the mask with the help of a stick hoist when it is necessary and can see through the mouth of the head. The backside dancer only follows the instruction of the front dancer inside the frame as well the Master's regular thud.

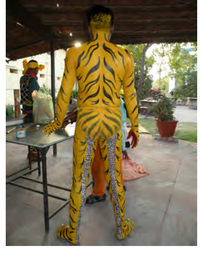

निर्माण प्रक्रिया / Making process

यह मुखौटा मुख्य रूप से चित्रकार समुदाय द्वारा बनाए जाते हैं जिन्हें भंज राजवंश के शासकों द्वारा पुरी जिले से गंजाम तक मूलतः कुल देवी – ब्याघ्र देवी हेतु मुखौटा बनाने के लिए लाया गया था। ढ़ांचे को लचकदार रखने के लिए बेंत और रस्सी को मुख्य कच्ची सामग्री के रूप में इस्तेमाल किया जाता है तथा ढांचे को ढ़कने के लिए बाघ नुमा रूपांकन युक्त रेशमी कपडे का प्रयोग किया जाता है। विविध सजावटी सामग्री जैसे चुमकी (सितारे), झालर और दर्पण को एप्लिक डिजाइन में ढांचे के कवर पर सजाया जाता है। हल्के होने के स्वरूप पालधुआ वृक्ष (पंगार वृक्ष) की लकड़ी को खोदकर बाघ का सर बनाया जाता है। इसके पश्चात मुखौटे को चमकदार बनाने के लिए सफेद पत्थर, लकड़ी, ईमली का बीज, चूना, सीपी इत्यादि के चूर्ण से लेप बनाकर लगाया जाता है। शीर्ष को रंगने हेतु हरिताल (प्राकृतिक पीला रंग) का इस्तेमाल किया जाता था जिसकी जगह अब बाजारी रंगों ने ले ली है। बाघ को तीन अलग हो सकने वाले भागों में निर्मित किया जाता है – शीर्ष, बेत रस्सी का ढ़ांचा एवं कवर, जिसे नर्तक नृत्य के पूर्व जोड़ लेता है।

Making of these masks is a primary work of the Chitrakar communities whom the king of Bhanja dynasty brought to Ganjam from Puri district principally to make such masks for their family deity Byaghra Devi. Cane and rope are used as essential raw materials to make the frame in a spring structure where as the velvet cloth is used as its cover which gives a tiger skin look. The varieties of embellishment like Chumki (stars), Jhalara (cloth frails), Darpana(mirrors) are used on body cover in appliqué design to decorate the body. The head of the Tiger is made out of a dugout stem of Paladhua tree a Indian coral tree, (*erythrina indica)* because of its lightweight attribute. After giving shape to the stem, a paste of white pebble, wooden powder, tamarind seed, Chalk powder, and Seashell powder applied on it to make polished and shiny. Haritala, a natural yellow colour was then used to paint the head which is now replaced by market paints. The Tiger is made in three detachable parts like cane frame, head and cover which the dancer joints together for dance.